



2539 3



ॐ नमो गीय स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 सा सिल नमो न का स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 का स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 न च यं ति मि नः सि वि क ग म द ताः सा धि क स्या य म दा नः वि म ति नि रु डा तं

स्वा मि ना नि य यं च न च य स्या त्म वे दं स म द य नि स र्वं क ल्य ना जा न म कं क
 र्या न स्या धि य म सि न सि वि न यं स ग नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 टि रिः म ग ३ य म श्व षः नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३
 दिं द्रियाः व्या ति श्च न ल वा य वाः य न क नि र्दि तं च यं ग लि वा य दं नः स वि
 रिः सा या क रु ग वाः य स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३ ॐ नमो गीय च क स नृत्त्यं च त्राय ३

शीतक संस्वजाय ॥ ॥ गंगा माता ॥ ३ ॥ तम शीतक संस्वजाय ॥ जाडा ॥
 धर्म धारु किन हृदया नंदका नी
 वन ॥ जाडा ॥ कमलासन स्थ
 का ॥ सहजानंद कालिका ॥ जाडा
 दन ॥ कावाक ॥ नरुटमं शुक्रमाला ४ ॥ जाडा ॥ १ ॥ गंगा माता ॥

२

॥ विष्णु सानुदः विष्णु विंम्वार माकात्र विद्यायिग सुसंरुव ॥ धु ॥ नमा मिश्र
 वागीश्वरः सयन सनि हृदया २
 यन कीन हृदया ॥ ॥ यिकनी
 कूटम विनयन ॥ ॥ धीमव
 वाययि यहा हृदया ॥ ॥ सुना सुनन मिगः टडा वन हृदयन यिय

समस्तमन्त्र १॥

ब्रह्मादिब्रह्मः किं न ह्युक्तं न यन्तं ॥
सामानिकं न कना किं नः पूर्वोदितं
उक्तं न कन युक्तं नः यंद न ह्युक्तं
यंच वृद्धः विष्णुः किं नः विष्णुः
शुद्धिदानना वदति किं न सा तसाः

॥ १ ॥ ~~ब्रह्म~~ नवी ॥ मध्यमन्त्र
दुर्जं वदितं रज्जुयन्त्र गजयति
किं न वा यियात्र ॥ ५ ॥ नमः
नः विष्णु रुतः यंच न वानि रज्जुः
रुतं न ह्युक्तं न यानि मित्र यन्तं न वानि ॥ ॥ जाग

३

वदानसः वाडयदियं वाडयदीयं यत्रिजातुदानं रज्जुसन्तनाडयदियः चडवि
दिगारुवनः वाडयदियं श्रीश्वं उयन्
लन विनया यियः सय जूष्टादन
यकं चकाः सामिकूलानि द्विनिदि
विननसारुगानियानि रावनाः सन कूसर मडदनयनि सयनियूजा रयधः

॥ ॥ दिनदवनयानि यिन
वृं वियात्र रज्जुडावाडदिवियसा
नवदयं नि ॥ ॥ गुरुचननः

सर्वार्थप्रदायः॥

वयलिरुत्रयिः सययत्रियुत्रिगः रुवऊनधिसंगः नलसगुमुकुं॥ ३

॥ ~~रागाजलित~~ मदायं

रदमादिगदभवलः आनाधिया

विनविनभ्वनवायिथानः मऊन

नाचलिदानदेवीः दानयगियविघ्ननिवात्रय॥

वयायसमयायात्रीमुवयिथान

नः समयानन्दरुत्रगिहा॥ कु

माहनिः वीभ्वरुलियं रवहुं का

॥ सदिशीसवत्रमाद्य

४

कात्रचकुंः रुवऊ कायविभ्वरुलियाश्यागयागिनीमनीयविवूऊनः सम

यानदरुत्रगिहा॥ ॥ यव्वेः

श्विमदियायिगा रडरुत्रजमाद्य

रुत्रगिहायि॥ ॥ सिंदनाद

यागिनीः दानयूरु रजानंधनयूरुः अवधूवत्रयियाः कर्षयानचनन

नाचनः नलसगुवः अमनारय

सिद्धिमाज्यः अक्षारु समयानंद

वाडियालाः उमनूयभादः अयू

निर्माणादि॥

रुद्रगिदा॥ ४ ॥

॥ श्रुतागुरुवी॥ निर्माणात्रिचतुष्टयदलसनाल

रुः सध्वगत कादिवृत्तादत्रयि

रुसमिजयुगलिगाधमामिनिः

नलनिलः सुगोयमकलनादत्रयी

॥ ध्रु ॥ उं नमामिदवीशोवजवी

नासितः विरुवद्वनधस्वसमस्त

दवीशुडादियानः यर्धुगिनीका

मत्रयशीदगसुविशुद्धसंतुलन ल्ययति॥

॥ वसुदलसनात्रुदवधमस्य

जं

कषाउभदलसंरुगाचकुंरुद्धाप्रिभगदलकमत्रमहासुखचकुः कं कालन
यशीदत्रुकनार्थं॥ ॥ दहनि

जिनविश्यात्रिगः गिरयानरुदनी

शुवगंरुगध्वयानादत्रयिश्यी

थादिदधनुमिगगसुगगयऊः

निजिनस्तनदायतिविनध्वनी

॥ ॥ दय्यनयगिर्विवूऊनऊ

यंदायमप्रुदिनिसिसमवंगवऊदवीशऊलऊलमात्रुदुश्यायसत्र

॥ गङ्गा कदम्ब ॥

नाः दुर्गा गिता गत मा कृपया गा ॥ ५ ॥ हे ॥ **गङ्गा गङ्गा** रजवी ॥ गङ्गा कृ
दहनयं च ह्ना नख नय शय शे
॥ कु ॥ **गङ्गा** देवी विनायका
समया नंद ॥ ॥ विन विन
ददया जानं ॥ ॥ यं च वृद्ध पच स क व ख न य श द वा ज स न य म दि

३

॥ गङ्गा गिता ॥

तददया ॥ ॥ उं आ हूं की ख ख धन क मि न श उ म नू य धृ क्षा नि वि न सा ज्ञान
नंद ॥ ३ ॥ ॥ **गङ्गा** क न दि ॥
यि गा श वि प्र मा न द रु द य वि ना
ऊ वा ना दि स्मा द्वि सि द्वि दाय नि
ग न न क व धृ मि न श ० ॥ न य जा गि ती द वी नि न व धृ ॥ ॥ वा य य मा दि ती द

वीधितवर्षाशयश्चिमभंवात्रिनीलोत्रवर्षदहा॥ ॥नेमगसंगसिनीदलित
 वर्षाशयदक्षिणवर्षादवीधम
 यकमृदाशयनाशयविकसंरुव
आगरेनवी॥३॥आं॥६॥रु॥७॥अ॥ग॥न
 कय॥३॥अ॥रु॥व॥न॥ल॥य॥व॥य॥य॥न॥ि॥श॥व॥॥ ॥६॥॥रु॥व॥व॥रु॥वा॥दि॥रु॥व॥न॥ि॥य॥न॥ाल॥य॥य॥

घाटयशविष्णुशययमस्ययमसलिनयचरुहानसर्वविद्या॥ ॥सर्वयदुनादुस
 रुतयुतयिमावासांजयस्मांशदा
 दवेनिगृह्णत॥ ॥दानय
 माकिनरुजसंसाजगथागनयं
 समयावदलुदातयमिसर्वकाशसर्वसिद्धिसंयतिमाकिनरुजल्येवागथेवा

उपवतमस्तु ॥

कंथयिवंथडिद्युथमाशिकअथमगत्र॥ ८ ॥ ३ ॥	नागहरेववी॥यवन
मंठलःयाविजंऊलहाऊवःव	किमंठलंरुगनुमंठायत्रिमुक
यमयागुरुकादियत्रियत्र॥	६ ॥ष्टदवलिरुद्ररुद्रम
वैविद्यनामयश्चरुमात्राश्च	गयश्चामश्चिद्वश्चिन्ददष्टवी
मूढविगंकारसिंरुद्रुं॥	॥यंविजंऊगडिजामःयंमल्यंचयदी

अतिन ॥

यंरसमित्रयःयत्रिगःयकलितःउंकागामनरवर्ज॥	॥उंआहंनयमुता
दमादिगवहिविग्रन्धत्रीश्चकनयी	यस्वदवमानिगुःशियाकप्रयव
स॥ ॥उंकात्रादिकमन्धवि	नीनमदनाद्विष्टिरुद्रानयानि
दुगुनिमगुलियुदंरुनयित्रले	वकावलितल॥ ९ ॥ ५ ॥
हवागयथमंऊवि॥अतिनअननऊलकाहुवमासःमनुमधुलचकुनायाश्चक	

यजुल्लेखलजालः संयत्रिहत्रिसप्तमस्तुलचक्रयाया॥	ॐ ॥ उमत्रुद्धनयियाः ॥
नकत्रुगज्जात्रिगघदत्रुनदत्रयि	याश्वकवात्रादिजात्रिगघसम्बत्र
दत्रयिया॥ ॥ ॐ गिस वित्रवि	लखत्रुजदिजदिगदिप्रसुसमसा
नरुजुल्लदगसर्वदववकः याउ॥	दवीमित्रकिवयनसंदाया॥
त्रिपुवनतुक्ताप्रकयायरवादाः त्रिपुवनतुक्ताप्रकवीत्रवित्राश्रितित्रिपुवनध्व	

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नागलः सयसादिलरु त्रियाडयकावावा॥	॥ अहिनिर्गसतगुत्रुवात्रगुत्रा
हृः द्वादिलालरावज्जरावाश्रुज	समत्रनरुयचंघनः द्वादिलालरु
यमात्रुज्जात्रियसंदाव॥ १० ॥	॥ ४ ॥ ॥ वागत्रिग ॥ अनुरुज
गधमगवकात्ररायोत्रलेत्रुयवी	मितविचिंतकलचंरुडं आश्रुका
त्रवजामगसदकसफसंसात्रिगहानामकय॥	ॐ ॥ विद्यामयुत्रसवाधिरु

नदायक सर्वे नवायित सद् ऊक न सं १ ऊग न मनु खधित मु न्य क न ना वह
 गभा न ता स नं वि न द ल र्यं ॥ ॥ व ऊ य न मा न म यः ग न्ध म व
 संयुक्तं मं र्व ख धि र्ग य र्ग यि य र्व ॥ १० ॥ र्क का न म नु य ध म न व न्ध व
 ऊ संख्य यि ग वि या न क ल र्यं ॥ ॥ य न म ल य न र्ग न क न य र्ग व
 आ क र्ग म य द कि नि ऊ न ल र्यं १ ॥ ॥ टि गि र्ग व न द व नः य क र्ग न स ल र्य मा नि

य ऊ क कि न र्ग ॥ ॥ या या दि आ च म न दान य न र्ग स म व क य हा मि न वि म न
 क ल र्ग १ म हा ना ग द व नु य वा धि वि र्ग न र्यः स म य ल र्ग न व क व
 की लु र्ग ॥ ११ ॥ ॥ वा ग न ट ॥ व क व र्ग वि नी ना च न मु द
 वी १ आ ग द म नु ऊ य र्ग व न की व न ॥ ॥ ॥ गु र्ग द वी वा नू वि
 म हा मा म कि द वी १ ऊ ग न य मा दि न म य न र्ग स न र्ग ॥ ॥ आ ग न व द

गतागगङ्गङ्गङ्ग ॥ ॥ निलवर्णचतुर्वक्त्रकपिमस्वयिनर्णः यन्मान
 दसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ वज्जय ॥ ददजा
 रुनहासश्चिखिना ॥ ॥ वज्जय ॥ विन
 मानदुसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ दिगंविदिगंकाकास्यादिऊमजाकि
 यत्राः यावत्तस्मिन्कस्मिन्वाधिना ॥

१२

नीदविः सहजानलुसन्ननिधनाश्चिखवज्जर्ज ॥ १४ ॥
 चनमजावाधिना ॥ १४ ॥
 ननः कियायिन्नर्णस्वनाः धन्यी
 ममहिनामसानः मकूटकसा
 सन्ननायाः सन्ननर्णदनिमान्काजाश्चमविलादिनीः वज्जवानादि

॥ १४ ॥

रुदातदिया साग्रसा ॥ ॥ सा लिख्यनः वरसु समयनः कार्यं नरुवयित
 वात्रा शमगानि नावः विवि
 ॥ ॥ गियधमः खट्टः द्वाद
 वकात्रा शमविनाहिनीः व
 मिजन्ध्या ॥ ॥ गोडो मित्रिता वः ॥ ॥ ऊजा त्रिया डलः सकण्डु वः

१३

१३

नम्रात्रा यशसमया ज्ञानदः ॥ ॥ त्रिग्यवाः मधुनः सत्त्व प्रावडवायादि ॥
 ॥ १५ ॥ ॥ श्रमाकावयि ॥
 कवादि शकमले कलिस्तयन
 पुक्कविनः खनरुत डि वेयि
 मीयि डायि ॥ ॥ दयद्रुजा गिनी लयन जायि शमसि कूत्रवदिया लडा

१ विविध वि० ॥

दियानसमान ॥ ॥ सासुदुदलयालः कं वियवा नाशवतु सुखदुयियक
मरुनादा ॥ ॥ रुतयिग्वजलि दमकुडनू विनाश नयनात्रिमा
ज्यउरुयनउविना ॥ १७ ॥ ॥ शत्रागर्गधारेनवी ॥ विविध
विदुनूनः सायानविगमिवद नशदवासरुगवः सुवनदुव
नूला ॥ ५ ॥ नायेननमा मिथीसंवन विनाशवऊक गिनील गिनासासु

१४

२ अनानिनिदिगजा न० ॥

संभंगना ॥ ॥ वऊवा नाहि आत्रिगमकलुशु विगं विनविलख
लिसमनधं विना ॥ ॥ लमक दहनवित्त्वमासमुदकयशक
नूधनूधनायलायनविर्वन ॥ ॥ द्वादशरऊधत्रियाः वाजि
वउवदनशनीमसंसावः गराध हनुविना ॥ १८ ॥ ॥ शत्रा
गर्गमाउ ॥ अवनितिदिगजा नः नीलसमदसाशककनयिनयतिरिख

मवदना॥ ॐ ॥ गता हं हं गता हं हं हं जागज्ज्वनकारनाया॥ ॥
 निविधितः यत्तद्गुणिसाहिमं हृदयागस्वप्नयात्रीः प्रियुडान
 मथ॥ ॥ हविहलवक्ता ॐ हृदयडमात्रालविद्यन
 इतिमकुः स्यद्वनधम॥ ॥ विविदिगत्रत्नमोत्रिलंकुगद
 स्रज्जगगविवीष्टिगवन्नद्वदयकं॥ १७ ॥ ॥ रजागस्वठकान

१७

यज्ज्जानिनीदिगवामजानः स्वर्गकीनममालसंशाम्भरागद्वस्वमाह्वं
 विनयासाः प्रियुवननायाः जूव नविना॥ ॐ ॥ नमामिगीव
 दमहात्रायधमः जागहृत्स्व
 यिनविनविक्रमः महाकाध
 उड्ययव्याः दृष्टकनायाविद्युगिकिन्नतार्यिदीगज्ज्वनार्ककन्नतय
 ॥ ज्जगिद्वषनाग

ज्जगिद्वषनाग

२५ य वा ८८ ११

नाः वेदी संज्ञा सा त्रा ख द्रु स्रज ता ॥
माया पाद व रज ता १ स म न स
मादि ग द द ॥ ॥ य लो रु
यू न स र्ग मूर्ध का या स्रज त ल
म्य ल स्रज वि त्रा ॥ १९ ॥

॥ माय व माया यू न द ल व क्ता ओ द यि
माया त्रा ग वि मा हाः ह्री न वा यः ४
त्र ताः यु क लि ग मा ग्रीः क यू न न न
ना ग व दि ग च न ताः वा य स्र ल
॥ ना ग म धू म ग ॥ ऊ य वा ८८ विः ह नू न य न

१३

म १ स य व स्रज स्रजः ऊ ग त उ ध ज नी ॥ यु ॥ ग न रु न व वि या द क म न स हि
म लु लः म र व न नू तं मूर्ध का या १
त्र य ष्ट उ ला वा गि नि गि नि ति त
गि य र्थ नः गी वा नू उ न न ल नि
कू ट क म ॥ ॥ गि न ग सि धू वाः क ऊ ल रु न १ क मु त्रि क र्थ नः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ १ ॥ **स्वस्वस्वसात्रि ॥** **॥ रुतयिस्वस्वस्वस्वः वायुः त्रिदासाश्चीवज्जदवी**
यसादः श्रीदन्तुआयाया ॥ २० ॥ **॥ रात्रागमायव ॥ तिर्कुर**
वज्रवधनदन्तुवनायाश्चीद गगमनः कागिनीययिस्था ॥ कु १०
जानयादिदवायुलिः ज्ञानंदा दिदवाश्चानिनाचं निदन्तुआम
नसासंयर्ह ॥ **॥ पूर्वसिगादिरुतुतिर्कुरलदन्तुआश्चस्वयिज्जतसा**
नयायादाविद्यानंदविनगवस्वस्वः चक्रनिर्हंदं संयुगावाधिवदं दिगुनजलो

नमः शिवाय ॥ १ ॥ **यिआदिस्वस्वः ॥** **॥ श्रीआदियालः कलियचदालिश्चिगवज्जतहाकिर्**
निवाज्जगं ॥ **॥ जालिकाः** त्रिदयिगालवचर्कश्चवड
कागिनीगमत्रगिगं ॥ ययिसयिद्यविनिः ज्जयसं
कुरुश्चिदगिकमलकलिगं वाज्जगं ॥ **॥ चस्सलिद्यालि**
वाचिवगालिश्चलयनवडस्वस्वदन्तुआवाया ॥ २१ ॥ **॥ रात्रागमायव**
 ॥ २१ ॥

२०५॥ १॥ १॥

॥ चकी कं लुल कं गिला च क स्य स्व न र	खिगः गी व नू उ न ल मि न मा ला
१ सि न च वि च कीः न याः रु सा	वि स खि गः गी ग न क ता दि र्वा
वू लि ना या ॥ ६ ॥ य रु स थी	द नू डी नः मा नू का ना याः इ रु
ना थ थी स म्ब न ना या ॥ ॥	व ड क ना ग क दा थ ध रि याः
कं थ वि या उ र व ला र १ सं य त जा गि नी क म न वि द्वा सिं ग न म दा स	

१६

२०५॥ १॥ १॥

स्व म त्रि न य म्भ द ॥	॥ व ड वा ना हिः आ त्रि ग न सं व नाः ना र्थे यि व रु
वि द न लं ग १ वा रु नि का न्ने यी	या रु दं गि द नू वः अ रु व रु
ल न य सा द ॥ ॥ म रु ड म	वु लि न यि याः म डी गि क र्थ या
न थी रु नू व च न ध य म्भ द रु य	रु आ लि ग दः कि दं गि द नू व
वि ना म यि गुं न्य क नू म ॥ ११ ॥	॥ ना ग रु म रि ॥ क य १ वा रु

वा नृनि शक्ति मय दया नि नंद हा
॥ ३५ ॥ ॥ ऊयं श हा उ जू रु व न स
त्रि ॥ ॥ ऊयं श वी द स म सा न
॥ ऊयं श वा ख हं : ऊयं ग म सा न श्य न

महागणेशाय नमः ॥ ह्रीं कारं संज्ञातः ॐ
कलनसमइतिः कालाकलनस
अनगमत्रुतिः स्वप्नयागकलध
महाकादत्राय ॥ ॥ अडा

२७ ग हि ४१॥

किञ्च विद्युनिहता॥ ॥ वृक्षद्विहजमयतामनः दक्षदहनः सुविनाश
दक्षानिखिनादितायनाः सद्यकिञ्च नः विद्युर्दगा॥ ॥ विविदिच
लो रुद्रा विद्युषिगः दिव्यतल सस्यमोत्रीरुद्रगतां दिग्गमस्य
यतिः सिद्धिवलरुलदायकं॥ २४॥ ॥ वागकोशिकवसुग॥
अतसिक्कसमश्रुतिः दहयुल्लखना विविदिचतमधिमकूठविद्युस्त्रिगा॥

॥ १॥ ॥ नाययीत्र श्रीः अथ विनाशनाचो आर्त्तनन्दविनाशयिः अथ
॥ ॥ वागमडरुवः विद्युमरुडा दक्षनाशयुक्ता आलिगताः अथ
यमहासुह॥ ॥ विनाशयुद्ध निः रुद्ररुयकनाशकस्य निदिनः स्व
निः गङ्गा निवासा॥ ॥ मागव पुनर्दक्षानिखिना विद्युर्दगा २५॥
विमसिग्रताथः गगाधविनाशिति॥ २५॥ ॥ वागसिग्रमवसु॥

(किं न वनं कुरु न ॥

जिन वनं कुरु न निःशुल्लख वलम न शविनासायि समन संः ददा आलिग धम
॥ ५ ॥ नि वस ह ह न यः शुभा
उ न य न ॥ ॥ वाय स र ग स म
मा ज्यः नि र व ता ॥ ॥ अ व क
न य म स्व संः ददा आ नि ग धा ॥

न सं व द्य २ ग धा आ नि ग धाः आ न
न धिय म य न २ ना गा वि ना ग इ यिः
क नि सं का गः वि रु र व ना २ सू न
॥ द ह दि ह रु व नः श्री का ग म य ना २

२१

पुनः लिख कुरु न ॥

य न मा मि ह न ख लिः आ नि ग धा ॥ २३ ॥ ॥ २ ना ग का मा द ॥ य क नि
ग हं का नः ला रु व म नू तिः ०० नु
लि तः शु धि क ल नः न त म कू ठ
द वि रं रु व सि ध ग क न न श वि
नि वि द्य स न क न न ॥ ॥ अ न ता जा न लि तः गी रु आ न वि रं स र्व नि

नी ला का स म द द श वि श्व व कः
का र्ता धि र्य ॥ ५ ॥ नो मि श्री य र्व
ध ना थः गि रु व न वा यि नाः य ता
॥ ॥ अ न ता जा न लि तः गी रु आ न वि रं स र्व नि

पुष्टेन दधानं श्रवणमर्कनीहृदि पाशधनः श्रवणमिणः सर्वधनकनकां ॥

॥ नानात्रलादात्रनोयलः क
लात्रः लीषमवदनः प्रियुवनवा
यागिसर्वरुयदत्रनः पुठयिमा
कादिः वादिगयादः सर्वसिद्धिमाकुरु लदं ॥ २१ ॥

किंमस्वत्ररुषितददं श्रुदयुक्
याः पुत्रं ददिवि ॥ ॥ विनाश २२
आदिमांशमानसं श्रुदयुक्
कादिः वादिगयादः सर्वसिद्धिमाकुरु लदं ॥ २१ ॥

२२

२२ कले ३१ ॥

॥ सकलजगत्पुत्रसम्पन्नविनाशजन्तयसकलधनकनिगसुखचिन्ता ॥
य ॥ सम्पन्नसम्पन्नकृन्मदि
नन् ॥ ॥ दवीवात्रादिगु
नविशमत्रविश्रवा ॥ ॥ सक
त्रातियगिसुगतिवागिनन् ॥
॥ लवालावकृतादकिविकचिन्ता ॥

२ कने ल्या ४॥

२ अन्तर्धर्मः सुखत्रयि न गत सुविन्ता ॥ २८ ॥ ॥ रागा नाट ॥ कने
न नृयत्रा क ख व क व न नृय व
ल वि सु र्धं ॥ कु ॥ ना च यि ज
द म नृः गी य न न सि न माला ॥
अथ विद ना २ अन्तर्धर्म व न स ध या ल वि मु द्धं ॥ ॥ क क वा न द नृ

२३

२ कने वि क सं व ४॥

व क क क द वा न वि ना २ अन्तर्धर्म व का क ग गि स द सा नृय ॥ ॥ रु न कः
रु ल क द म रु व न नृय द २ नि
॥ २९ ॥ ॥ रागा का मा द
न न न सः द्या यि म ग न द न व न
मु न ल क न र्धं ॥ कु ॥ न मा मि गी यि न क ख नः मा न रु व रु य द न द म ॥

नि नृ व न ना थ य क स म्ब न ली य
॥ क वी क स रु वः रु स म द दः
२ द्वा द म नृ जा व द व नाः द्वा द व म

अथ य ४॥

कनकाः रुद्रः च उ मख अति विक्रान्त धरा ॥ ॥ अत्रिधयकारुषिय
वचाययियाजः कात्रिना विविम
दङ्कठाशकाः वायुचर्मस्वत
म्यलनायकः विनियकुमदावी
लेखनः युं ऊयीसयावसं सलधला ॥ ३१ ॥ ॥ रागानिवादा ॥ अखयनित्र

मदाशविष्णुकलिगः अइच
मदा ॥ ॥ शुभिवीनवित्र २३
नवित्राशकनूधर्मं गीतः वीनवी
॥ रागानिवादा ॥ अखयनित्र

ऊनः अद्यय अत्रयमः गराहकमल ऊध्यायिगाशुन्यगाविनासियः वि
यादवः यानविंदुसमकदिगा ॥
कनखरावदुदुल्लहसंका
सिगः ऊनऊचदुसमयायिगा ॥
चकवगिः भवमलुलरवनिना २ निर्मत्रदयालवकध्यायिगाः अदि

धु गानमासिनीलालम्हः नित्र
दिगा २ सत्रदचंदसमः कऊयका
॥ स्वदगाकागवनः साधित्र

नीसिद्धकृतमप्यसाधना ॥ ॥ ज्ञानन्दयुत्रमानन्दविप्रस्मासदङ्गः चतु
 ग्रामन्दङ्गसंरुवा १ युत्रमाप्यवि
 गगर्स्यायिमा ॥ ॥ इव
 नक्तकारिसिद्धायानंगगाश्री
 प्रधनः युनुमहासुखजानक ॥ ३२ ॥ ॥ श्यामगगधरनवी ॥ ॥

सुवनकलितमयगिणूत्रायनयवंगि ॥ ॥ नाचयिवङ्गसुखयत्रमय
 नलितवंगि ॥ ॥ प्रसिसद
 ॥ वङ्गविद्वन्मयसुदुग्गात्रा
 माप्य ॥ वङ्गिद्यात्रीवंगालिः चण
 कड्याकिनी ॥ ॥ नमामिगीङ्गागं वलः ॥ ३३ ॥ ॥ श्याम
 लिदवीशसिद्धितियायिनी ॥ ॥

सुवनकलित ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

गुंदवीः श्रीगुवनपुयिस्था ॥

॥ यर्वडरूपपश्चिमदक्षिणादिगदवीर

जाकिनिद्विपिनिःचउमिकंवा

ऊनि ॥

॥ चतुर्गदिवारस

हलंगुदवीरतिनिनगुदवीता

चंगिदवी ॥

॥ दप्रिदत्रवसा

२०

दूदजूसलगहदयाउमजागी

नीः समप्रसंगव ॥ ३४ ॥

॥ गगकनदि ॥ श्रीमंरुनाथवलः महाचितविजयाप्रश्चंददासस्वसंधात्रीना

१ कि नशानगनय नि ४ ॥

गवासदरूपयि ॥ ॥ नमामिश्रीमंरु कमात्रा ॥ उगादिभ्यः उगागगुन

गुनवायायिना ॥ ॥ यस्तु कथ

त्रगुरुयत्रमगुनूनायाश्चीधः

मैयगुरुननयात्रमउलनंरु

गा ॥ ॥ उगागनाथ उगागनी

लंजनामा ॥ ॥ रसर्वभासविसा

नः यंदितनीनंरुता ॥ ३५ ॥

॥ ॥ गगनामकवि ॥ किनववगनयनिलुवनशीकायगकः नीचीम

नमसि किनवत्रमूनि शनयात्रमद्युल मास्यगमिदुत किल्ल (६): ऊरागना
 थप्रहयदागा ॥ ध्रु ॥ विजा
 दवयनमासिवृगमत्रलोक
 यलिकमत्रायुत्रपगिचंदाम
 प्रकासितवाधियात्र: वासकमलधनदाथशुक्लसुमंगल: प्रागवसुव

मगिगरियात्र: अत्रगात्रयात्र
 मत्रदवंशमिद्विकगिवधुदग २६
 विनत्रददवा ॥ ॥ जालिकम

दानिदइस्वरयदवना ॥ ॥ हूं हूं रगवतिकया रगवति: नमामिथी
 वृगमलदवंशनमासिश्रीनल
 ॥ दमनुमिद्यागिधमत्रद्वन
 श्रीप्रहगारुवसित्रगगधनीया:
 ॥ शनयात्रमवि ॥ नमामि शक्तिनक्षत्रुकचंद्रकचंद्रमत्रुति आत्रिगिग

ददव: स्वर्नमस्त्रयागात्रदव ॥
 ताता: अनूगगचवनमित्रयत्रा
 श्रीलायुस्त्रमत्रतागति ॥ ३३

नमामि किनवत्रमूनि ॥

शयं च ह्यनयं च धातु खत्रयाः वर्द्ध धर्म जात्रय खत्रया ॥ १ ॥ न ता हूं हूं गेता
 हूं हूं रजगग संसात्र ड धात्री यामः
 वा ॥ ॥ न तामा मिश्री भयत्र खत्र
 त्रति सर्व पाय खत्रय कत्र दान यूनय
 मी धातु वा गि भवत्र खादश इवात्र यलि मदिता १ खादश गोत्र धमून मून कात्रा सर्व

नादत्रः न तामा मुन तामा मुयं च किन ख
 स विमिद्वि वत्र दायनि १ इ विगस १ ले
 हूं माक्रयदा ॥ ॥ न तामा मिश्र

॥ न क व द न १ ॥

दवय त्रि स खि गा ॥ ॥ न तामा मिश्र वा गि खत्र ममु लय मगि त्रिनि वा गिता १
 सख विमा दिग इ ख विना सन य
 ॥ ॥ **१२ गो रा मला उ** ॥ न क व द
 ऊ ख भ य स क ग न व न धात्री ॥
 भवत्रा १ स यत्र जा सा भय त्रिय त्रि ग ड धा त्रि ॥ ॥ द दि न ही ग द य कि

न तामा मि किन च क खत्रा ॥ ३ ॥
 नः त्रल म कूट जात्रं कृता खत्रय
 ॥ न तामा मि मं इ शी य म न ल
 ॥ द दि न ही ग द य कि

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वाममहाकात्रसगधमधुलमाशयकलितथिगा॥	॥४॥
यादिस्यदियायिना१अशुरुय	वक्रव्याविद्रिगद्वनता॥
वक्रवत्रयसात्रदागरुनयीया१	युत्रवत्रनमात्रसिद्विवत्रयसा
या॥ ३१ ॥	॥५॥
यद्वगतिव्याधियजुनिगाधखत्रा१मदिमूकात्रलारुयना॥	गक्रमस्वर्गितयनिगाधव
	तत्रुविदिल

३०

नर्मकासाः ॥ ५ ॥ गमालियाविष्णुः सात्रियादर्यः सात्रियाइखविनासुधर	वयमइखविनासुधर ॥
सात्रियासात्तासात्रसंगसाः भव	श्रुतयात्रददिनकयाश्मसल
यत्रशुवाभाकूयवऊः स्वर्गलि	वास ॥ ॥ विचित्रकल
वनस्वत्वाहुः स्वर्गयत्रकत्रतिः	
कलियासाः ऊठाऊठमानिमल्लिगाश्चस्वादत्रगत्रचित्तर्गस्वादत्रस्व	

८ मधु १२ पृष्ठ ८॥

साः या यत्र मित्रि मित्रि वा ऊं ग ॥

॥ नत्वा तत्र विगतं लोका निवास

खिक मस्व गुणि शुंद नार वि

नाद लो न मस्व दाना न मोक्ष

रे गक्षा धियर्ग ॥ ३८ ॥

॥ **स्वागवसंग** ॥ मधु प्रिय प्रिय

नाइ य नि कृना ला र स क न द

वः ख न्दि न या दं ॥ के ॥ मी

आ दि वृद्धी म इ कृ मा र ल अ रि वं धू नि य स नि ह ख न ॥

॥

३९

८ मधु १२ पृष्ठ ८॥

कं क म नू चि वा गु न चि न वि ख मा र शु न्या ग रिं व क नू द वि दाना ॥

॥ वि ख य वि ख म कृ न या न ग

म न मा र वि ख वि या धि क र्ग

यं गु नू ख यं शु ॥ ॥ स न गु न

य न मा दि वि नू आ ला धि र

ग म ड ति न द गी न य व न कृ नि ॥ ॥ ३९ ॥

॥ **स्वागवसंग** ॥ न मा

मि र कि न ध र्ग म धु ख यं शु र पि रु व न अ नू न य र्ग म धु वा गि ख न ॥ ॥

॥ नमो भित्तु जितयच जितमास्तु रदभानु मिद्धा विभनन हसुख वायाग ॥

॥ उवर्जमध्यामा ननुवन
महामानिषजा ॥ ॥ धर्मशी

सुलमाभसूत्रास्यल्लयि॥

नमिहृद्वर्जसपथनावा

गङ्गीलाकखनमधुलमहासूत्रनायाश्चकाधी

श्री कायागकश्चयेड निग्रजन

मृदुहस्तस्य निमग्नश्रितियावत्

वाममुक्कयूष्कधनूयनाशदहि

致

श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीवज्रवक्त्रं नमो नमो नमो नमो नमो ॥

वाकवङ्गुलिखनविना ॥ ४०

॥ १२ वागव्यादि ॥ योग्यतः

सत्यता नामधुलनामाः नामाद

सुदृढकाठिहाथनात्राःआमी

निर्वृदयान्नः वास्तुचितकप्रद

स॥ ध्रु ॥ डंकारमधुलनाः ह्र

त्रिना.त्रकागितिचन्द्रयात्रेश्वरकधामखत्रिकले.प्रविगत.वायुसः

卷八十一

कत्रसमान ॥ ॥ यच्चैव कविः क्रियात्रः दक्षिणत्रयविदलियालशय
 द्दिमयययकासत्रः उरुत्रयवेभ
 नादाः निमिषयंकात्रियाशकाय
 लः गगनकूदय ॥ ॥ त्रयम
 यर्मधातुखत्रिकर्तुयामधुत्रय्याः गाडाकिः वादत्रयकासहायित्र ॥

धात्रियात्र ॥ ॥ संयुक्तकार
 काकविर्लुमधुलनाकः दलिया
 त्रयगन्धर्वत्रययमः वृत्तमित्र
 गाडाकिः वादत्रयकासहायित्र ॥

३३

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥ ॥ रवागविरास ॥ दिशुः कवकमखः गगतवदधुः शनगन
 मकूटकसिः गिनिनाचना ॥ ॥
 श्वरुनमिश्रिषुवधुव्यायि
 नकत्रवजः विनासिगदध्वनि
 वयि ॥ ॥ तत्रमिमधुलमायाः उदियात्रममनेश्वथनयत्रवत्रमकन

॥ तमादवीवृद्धजकिनिवि
 तकिनरुनदायनी ॥ ॥ दहो
 श्वामकवाटकः चतुमात्रसिधि
 ॥ तत्रमिमधुलमायाः उदियात्रममनेश्वथनयत्रवत्रमकन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

युवसिनि ॥ ॥ श्रीवीशाधनिदवी सुवननमहिताश्चकत्रिद्विसिः
द्विदहिमसाता ॥ ४२ ॥ ॥ रमागत्रिद्विसिः ॥ ॥ दुर्गागरुवन
श्रीवितनखलाश्चन्द्रनित्रिद्वि
कंयुक्रयागुधदवीश्चरुसाववी
प्रिनिवृद्धसावाश्चमीकलरुः कयालनित्राल्यला ॥ ॥ वायुवर्मव

३४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सूयत्यालिताश्चर्व्ववाधनसर्वाकाना ॥ ॥ चवनसर्व्वमश्रीद्विनिता
नूनिमाताश्चरुनायिअसायवऊ
रमागत्रिद्विसिः ॥ ॥ सर्वाकानामहा
श्रिष्टुवनरुलयिः महासुख
॥ नयायनिनातः नयूननिनाः श्रिष्टुवनः चक्रसूयिनीश्चर्व्ववि

三

॥ ८ ॥

अलावा शशीवकु का गिनी चत्र न सि या गतः गत्र नि स म य सं व डा ॥ ४५ ॥	
॥ रामाद सा ख ॥ सा या ज	ल वि न्व सा धृ स नि ला श मा द मा
या ड य द्वा दि गी या त्र मि या मा द	ग क ॥ य सं सा त्र अ सा त्रः वा ग द्वा
ख मा द द्वा दि ग या त्र ति व आ	सा ॥ ॥ अ न सी ख न च धृ द्वा क
प्र वि या श धू म म त्र वि श्व दा न य नृ द क ॥	॥ स द क ख ला त्र य ड न म रा त ध नि

श्रीदेवकर्मनामा ॥ ४ ॥

किं हं ॥ ॥ नमो नवीर्ह विः शत्रु उवादानः स्याम वधू गजचक्रादिगं
वायव्यामदादवीः कंका नवदनाः सिद्धवादानः श्वर्गधात्रि ॥ ॥ जय
कृत्वा नागमद्याः दमयानियः कृत्वा नदिगजचक्रदवीश्च नसा सिद्धवीष्टी ३ नं
आनाधिया नः सुगुणिसुगुणिकस्य सिद्धिकर्म ॥ ४३ ॥ ॥ ह्यो
गकर्त्तृदि ॥ श्रीदेवकर्मनामा दवीः पुत्रुवननाथं श्यक्ते दिनव्याधिरा य

देवकर्मनामा ॥ ४ ॥

वैवर्हदहा ॥ ४ ॥ नमो मिश्रीयद्वागवेत्यरद्वकृतीगुक्त्वात्रिः वज्रक
गिनीसुन्याता ॥ ॥ यच्च दिगः स्थितः कृत्वात्रिः निवर्तवर्हिरदक्ष
स्थयायुध्यात्रिगमविंद्रधना ॥ ॥ यस्मात्त्रिचोत्रिचोत्रिजाः
गिनीदेवीश्चामागिलिलोवज्र हंका नमवजा ॥ ४४ ॥ ॥
नागश्चर्ममावसि ॥ वज्रका गिनीः दवृत्तावायाश्च पुत्रुवननाथदहनयाना ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कु	गायित्वायिनमदासुखत्रयः कलत्रियात्रवज्रदवीद्वयियाः जनरुद्रहान
॥	॥ उड्डनात्रिषिदात्रः कमल
संरुदयि ॥	॥ रुद्रयित्रयत्र
वृत्त ॥	॥ सगुत्रयसादः च
वृत्तसूदा ॥ ४८ ॥	॥ रत्नागत्रायगी ॥ हूं हूं हूं ददधवृत्तसंसात्रगत्ररुद्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दाभ्रात्रिगद्यकगद्यत्र ॥	कु ॥ दवज्रगुप्तगना हूं हूं रगनाः रगः हूं हूं हूं ॥
॥ सननत्रवन्दिगत्रवद्यवत्र	कसुमात्रित्रयत्रनददधवृत्त ॥
रावविमकूतविस्त्रयगुनकूट	यित्रनमहूं रगीदवज्रगुप्तगु
नयुस्त्रयि ॥ ४९ ॥	॥ रत्ना ॥ त्रिदलकमः वनकसुम
सर्वाः सधूकत्रः दनूडात्रिना रगी विनूया कृत्स्नगमहदवीः सधुत्रनयात्रयु	

यायिका॥ कु ॥ नमामिनेनात्माः विरुवनमाताः वाहुत्रिदवीश्रीमगार्थत्रि
 सयत्रसूत्राः सत्रवांदितचत्रनः अन
 नंदनवे अमिवचंदननत्रवः अन
 गंगा अममवागममिठित्रः अनग
 रेत्रवः अष्टुदगिनीदेवीः अष्टगदवासरः द्रव्यात्र अममदारुयइतिनः

गात्रिद्विसिद्धिवत्रयसादा॥
 गकूसमः यात्रिजातवनरनृत्त
 मित्रथसः कृषवन॥ ॥ अष्ट

३९

निवात्रनिः अष्टगविष्टुनिवात्रनि॥
 यतिनंजनकमिमयं अष्टसमकस
 मरुशयायसत्रनागति॥ ५० ॥
 धालिनमौलीः यंचहूनयंचमडा
 लाः व्याचुचर्मकठिः रुषिरत्रमना॥ कु

॥ विष्टुवियायिकः गात्रनिदवीः अष्ट
 खरुत्रः दायनिदवीः अत्रमकुल
 ॥ **गरवागतादि** यंचकयाला
 रुजक्षत्रनत्रसिलमात्राः श्रीव्यख
 ॥ हं हं कात्रसंजागः खर्वलंवादलनी

पुनः कथा २४॥

लसमदहाकायाधियशीमहाकाशयचासुतनसदर्थरुयियाः। कायतवुसा
 कयात्रधना॥ ॥त्रकयतात्रा
 यमवेदनाइड्यकालिताः। यिंग
 य॥ ॥कत्रटिकयात्राः धालि
 हालाइनागसिन्धुसिधुः नोयूत्रतामः अयूनागअरुननसुसाहा॥

त्रिनिनयताः धात्ररुयंकत्रलि
 त्रकंमः डलमनरुसाकनूधम
 नखलौगमः नागरुयतामकृद्युन

४०

असुतनयना॥

किनवनमोत्रिः धात्रितमताः वृद्धसममनत्रककविवाइयतात्रागान्धवरा
 वाः मममनकलिसाअनरुनसत्र
 अरुक्रुयात्रादिगाविदिगांनुव
 गहासुखत्रागहासुनंमूनकात्रा
 य ॥ हूहूतमासियंचजाकिनीः यचरुगतिः हूनदाकिनीगत्राहूहू

ना॥ ५१ ॥ ॥२वागहैववी
 नः धुसिन्धुमात्रककुलवाग्धशग
 गहाहूहूवूवकयल्लियात्रा

ॐ मवर्धुन नृसि सनयनी १ ओङ्क न स म दाः ॐ ॐ नात्रः ऊ दा धिय नि ग द किल य नी ॥ ॐ क ॥ ड र्क न ऊ क म दा लि म वृ यि चः ड र्क का ॐ न मा ॐ ॐ ना न त नः सि द्ध ना न त नः वि नः रु का धिय नि ग न कि न य नी ॥ ॐ क ॥ य ष्मि म न क व ष्मि गीः ना मा धिय नि म द नि	मा र्क थः म थ न ॐ म व र्धु काः मि दं ॥ ३ ॥ ॐ ॥ य ष्मि म दि ग द ४६ क त नृ या १ द्वा ला द्वा ला म दा ॐ ॐ ना क त नृ या १ द्वा ला द्वा ला म दा ॐ ॐ ना
---	---

४६

या न र्क हा सः वि क तिः स्वा ना णा न मा मि दं ॥ ४ ॥ ॐ ॥ द द्दि ण दि ग द्वा नः सु क ना न त नः क र्क क नि रु द दाः य ॐ ॐ ना नृ य ना धिय निः ग न की व ष्मि गीः क ना क य हा नि तीः द्वा ना ॥ ५ ॥ ॐ ॥ द द न व न का न द वी य म दा ति र्यः क र्क यि ना णः य व ड न	य ल ना दि १ क न क र्क व वः म दा य य नी ॥ ॐ क ॥ द द्दि ण दि ग द्वा नः सु क व द्य द ना र्कः न मा मि सु क ना न ना ॥ ५ ॥ ॐ ॥ द द न व न का न द वी य म दा ति र्यः क र्क यि ना णः य व ड न
---	--

या २ अठ्ठ दा सा म म नो म हा र य दा नो जा धिय ति ग ष कि त्र य नि ॥ १ ॥
 क ॥ अ ॥ म म सा त्र य दा दे वीः कृ षु
 हा सा त्र यः ऊ म दा रि न सा मि दं
 य म इ रि त्रः यि गा त्र ग नः का धु य
 म ता लेः ना क म धिय ति ग ष कि त्र य नी ॥ २ ॥

यि गा य रा ग दं द द ना धिय ति
 ॥ ३ ॥ अ ॥ दि रि त्र त्र का न्य
 या २ व सि व न द्र गा र नः न हा मः
 क ॥ न म ख यि ग त्र का रा य वा जा धि

४५

नि म दि तिः दा ना ग हा सा म द नी ऊ म इ रि न सा मि दं ॥ १ ॥
 ऊ म इ रि यः न क म म ग नः क वा
 म म नाः वा ना य ति ग ष कि त्र य नि
 य सा ना धिय ति मं ग्री तः सा ला री
 ॥ ६ ॥ अ ॥ म म न व न का हाः ऊ म म थ नि यः म म कृ षु रा यि क ट न

त्र व द नि र दा ना च का न रि ष म
 ॥ २ ॥ अ ॥ वा य व न का म म गीः
 र य दा नो दं य म इ रि न सा मि दं

॥ साक ॥ वस्त्रो डीकानमदयाइता ॥

85

॥ दहदिहदाहः ह्रीं का नालय ॥

उत्तरदिगा १॥

नसासिदडाकाधुअरआसायनियनयःदानयतिनःमालविद्यतनिवा	॥ १२ ॥	॥ १३ ॥
॥ १४ ॥	॥ १५ ॥	॥ १६ ॥
॥ १७ ॥	॥ १८ ॥	॥ १९ ॥
॥ २० ॥	॥ २१ ॥	॥ २२ ॥
॥ २३ ॥	॥ २४ ॥	॥ २५ ॥
॥ २६ ॥	॥ २७ ॥	॥ २८ ॥
॥ २९ ॥	॥ ३० ॥	॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥	॥ ३३ ॥	॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥	॥ ३६ ॥	॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥	॥ ३९ ॥	॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥	॥ ४२ ॥	॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥	॥ ४५ ॥	॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥	॥ ४८ ॥	॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥	॥ ५१ ॥	॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥	॥ ५४ ॥	॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥	॥ ५७ ॥	॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥	॥ ६० ॥	॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥	॥ ६३ ॥	॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥	॥ ६६ ॥	॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥	॥ ६९ ॥	॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥	॥ ७२ ॥	॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥	॥ ७५ ॥	॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥	॥ ७८ ॥	॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥	॥ ८१ ॥	॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥	॥ ८४ ॥	॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥	॥ ८७ ॥	॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥	॥ ९० ॥	॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥	॥ ९३ ॥	॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥	॥ ९६ ॥	॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥	॥ ९९ ॥	॥ १०० ॥

४०

अद्ययसंलवाःताचयिदानःश्रीःसम्बवाया ॥	॥ १ ॥
प्रिमुलाःकनगिःउमनूगुरुसा	॥ २ ॥
रूःपाशयनगुवक्तसिचयवाया	॥ ३ ॥
लकताःखउमडाआरुनसवि	॥ ४ ॥
उचाययियाःवाद्यचर्मनिवासनकुरुतन ॥	॥ ५ ॥
॥ ६ ॥	॥ ७ ॥
॥ ८ ॥	॥ ९ ॥
॥ १० ॥	॥ ११ ॥
॥ १२ ॥	॥ १३ ॥
॥ १४ ॥	॥ १५ ॥
॥ १६ ॥	॥ १७ ॥
॥ १८ ॥	॥ १९ ॥
॥ २० ॥	॥ २१ ॥
॥ २२ ॥	॥ २३ ॥
॥ २४ ॥	॥ २५ ॥
॥ २६ ॥	॥ २७ ॥
॥ २८ ॥	॥ २९ ॥
॥ ३० ॥	॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥	॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥	॥ ३५ ॥
॥ ३६ ॥	॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥	॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥	॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥	॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥	॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥	॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥	॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥	॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥	॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥	॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥	॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥	॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥	॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥	॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥	॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥	॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥	॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥	॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥	॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥	॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥	॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥	॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥	॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥	॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥	॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥	॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥	॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥	॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥	॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥	॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥	॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥	॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥	॥ १०१ ॥

संचनः दिवा च कृति निक नून दियारु कल कल मा नू तु रु या य स न न ग
 डारिय न मा दि व क गु गी गा ॥
 य कि रिय नि रु वः सा य दू काल
 य नि य साः धा स्व सा न न म र कि
 ड नाः दान इ वा य ह साः दि च वं का ध वा किः ध र क न क म नः का ध ना ऊ न

॥ इम क ॥ य स त्वा था यः नृ य

ना दिः र स्य वि द्या धा स्वाः य ति र

सं सा ना का न कालाः गु ह वि द्य न

॥ इम क ॥ य स त्वा था यः नृ य

४८

ग न्ध म लु ले ॥

मा मि दं ॥ ग य म दि न य ॥ इम क ॥ नि ल्य ना क म त्र य त र्थाः सि न सि कू च र
 रं व ल्कं ध मा रं व ज्ञा दि व ग या
 मो लिः वा ना र्कां श्री क लुः य न यी
 श्री स म्ब न रू णि रु व न वि क डू
 ला ग म ला उ ग न्ध म लु म ल्धः व का न सं जा ना श दि रु क न क म र्धः य थिः

मि य लि ग न सि व नः म्ध र्व मा लि

व त मि च ना ग य म र त्रि यः या या

दा कि नि च कू व लि ॥ ५४ ॥

॥ इम क ॥ य स त्वा था यः नृ य

निर्माणावृद्धः॥

विदवा॥ ॐ ॥ अक्षहिमदादवीः पृथिविमाणाः सर्वत्र तस्य पूर्णविशु
षिता॥ ॥ यिनवर्धुसोम्यत्र
कसंगाजनि॥ ॥ कनकवरे
मले शूरयः लाकसंगासनि॥
रक्षाना निद्याखः वसुधात्राः॥ ॐ ॥

विनिदवीः सर्वमहयकत्रः
दद्यत्रः वामकत्रः अत्रिः सर्वक
॥ दिव्यं कात्रः शुषिगददा
॥ रनागरेनवी॥ निर्माणावृद्धः

४२

गायः गतकत्रसार्यवास्तवमयः यत्रियत्रिगात्र विविधमयगारिः यत्रय
ज्ञवालः निजवर्धुनऊमिग्रह
वजाचाकः मनुविन्यामिगः कर्म
वऊमिख्यालिमतः यत्रियूद्ध
लक्ष्म॥ ॥ पूर्वदत्रगतयचः स्रष्टात्राः यत्रविगतिरुदितवृ

यिगा॥ ॐ ॥ हूं हूं हूं कत्रहूं
वजिसादिगायह्रस्वयनीनी
पुनाः रुवसमदगत्रघाः यिमत्रद

द्वकार्यं श्रद्धा न दत्त गगनवज्रः स्वसमस्तत्रयाः पितृवत्तसमस्तत्रयाय विष्णु
 द्वं ॥ ॥ यश्चि मदन गगनः संस्व
 लाङ्किता श्रद्धा न दत्त गगनवज्रः
 विष्णु न नी ॥ ॥ अलम्
 स्या मवन्तु न जल्ला यिया यशस्य विद्या शितः विष्णु मय यः किताः युनमा सिवज

५०

॥ यश्चि मदन गगनः संस्व

सत्व सिनसा धियनि ॥ ५० ॥
 कयूनाल दमयि नूतनवा धिय
 यनमा नूतन मय यन मयु नू ॥ ५१
 हि चित्त मग यान नक्त श्रद्धा यि स्व
 धियदं ॥ ॥ सर्वतथा गगनयुज नयायः द्यागया मिमः वायव नू श्रय यूया म

॥ श्रद्धा गगनवज्रः ॥ यश्चि मदन गगनः संस्व
 दं श्रद्धा न दत्त गगनवज्रः स्वसमस्तत्रयाः पितृवत्तसमस्तत्रयाय विष्णु
 ॥ ५२ ॥ हि चित्त मग यान नक्त श्रद्धा यि स्व
 दमग मचल गुदग थगा नूतनवा

वासाददिन ८॥

दिक्किनः यत्रियविष्टः कसलकूलिसयत्रिजामत्र ॥ ॥ कसमडदक
मकगः शासनिकमनाः जिनकून समयाज्वाकयदंरमनुकुल
वनः दय्यसेनेनदयः दमावनम नियदलासुत्रं ॥ ॥ तसामित्य
कसम्वनायगुनुवाकः इधधः त्रियाश्सगुनुवननः कसमय
सादः अनूरुनसिद्धियदायकं ॥ ५८ ॥ ॥ रनागः मानसि ॥ वासाददी

५९

नः नडियिद्यत्रहीरसास्यविनामायिः महासुलयिया ॥ ५९ ॥ युजयियात्रः
जात्रयियाः सदकानन्दं रसयत्राः विनायत्रानयत्रिलाव ॥
गयनमयनः चिरुविनासा रूका यवाकचिरुः नककत्रिया ॥
नकधवयीः आह्नात्रयिया रूका आयित्रयातीः गायधानी ॥
॥ यावयिवगुनः याययसादंरुनयिवाकवजः गुनसमाधि ॥ ५९ ॥

८४ नक्षत्र ॥

रत्नागविलास ॥ धन धनः इधनः धनयश्चक्रिणी ॥ मर्द्धश्चक्रधकसमनः क
इन्त्यागमसु विनवन ॥ ५२ ॥ क
ककह्विन ॥ ॥ कृष्णनिशंक
न ॥ ॥ मालवतिश्रुतावयल
नदी शक्ति सगगाशकायानिवन्धनत्राचकवन ॥ ॥ कृष्णाय कृष्ण

५२

८५ नक्षत्र ॥

सुगताश्चमस्वत्रमंदिनयनवमस्व ॥ ॥ कृष्णदृष्टादिनचनवन
युधमासिसुनवजुभिनी ॥ ५० ॥
सायनः तत्रतिनकियः सिनवा
आरुत्रधाकिमिपुशसयनाः न
वीकयिपुलियं किमिपुशसजकि कसत्रिनाश्चदिनजालिहसहवन

॥ कृष्णदृष्टादिनचनवन
॥ ॥ रत्नागलत्रिना ॥ स्वदम
सानाथिनात्राऊनदायाश्चकु
यावमिहसुनिहात्रा ॥ ५१ ॥ द
॥ कृष्णदृष्टादिनचनवन

सिविकगालगितिनयनमृगिलानूवा ॥ मिहसुहसुलःसाम
 वमिनवतायाःअङ्कुलधनगिः नयावकयाश्कगतिवयनःख
 लोमनकदायःयश्मिन्नरुग मकूठकमकयालं ॥ गायत्र
 गथागतददसिचनदवीजः कदिनाथदवीजःयावनिजयं
 रजगतमानमिनाधिःसयत्रजगमाता नहिस्थमायिकदिनायुषं ॥

ॐ

हवदाषरितमगितिनयसुनगवजःकयिस्थजानूदवीयःगुन्यसा
 यश्चययिकलिकिंपीनदी सङ्गनाथरावज्जरावद्वियं ॥
 ३१ ॥ ॥रागगादि॥स यतिमहिगःमधुत्रचक्रंरुडदी
 गुरुयगाकवितान ॥ ॥ ॥सयकिनादिगःगुङ्गमलकंरु
 दन्चगीगवयःनमनाहं ॥ ॥यंकेवज्ञात्मकःसर्वज्ञज्ञायंश्य
 ॥क॥कदागात्रहृदंनयुःतिउवननःप्रामितामिजनाःचक्रस्वस्तिमान्

स्वपतिमहिग ॥

आनविषयानाक्रानितका

दयः नृपाद्यानवधर्मगानं गया मधुया यिभः विश्वमधुलच कसाकत्रयनः वतकि न
 कृनाडकृचिपकृनदिव्यां ॥ जागादियकृमदासुदनामानृत्यः ॥
 गुगितवलकनसर्न ॥ ॥ अ ॥ वकयानतः सिकृतारिद्वार्यं ॥
 मागयनिं अथः गताचत्रिचन ॥ ॥ वृद्धचत्रिचनः वृद्धगुल ॥
 संशुपकृदिनादः रिद्वार्यं स्वय ॥ ॥ वृद्धचत्रिचनः वृद्धगुल ॥
 निमृष्टगः गतावृद्धं वृद्ध विरावनया वियत्रिगः मिदसकत्रलाय ॥

का
 न्य
 सि ४॥
 जं ४

॥ गता हूं हूं गता हूं हूं गता गं हूं हूं हूं ॥ ३२ ॥ ॥ रत्रागवसंग ॥
 कायिनेवंमाः वाकित्रविनाश ॥ नृदगसर्वदवकिरुवनलिना
 ॥ ५ ॥ ॥ अ नृदगसर्वदवकिरुवनलिना ॥ कत्रयियाः रुतयिनिद्विसिद्धि
 लादियसायं ॥ ॥ गगाऊ ॥ मृना नृदगसर्वदवकिरुवनलिना
 त्रविमासि गगाइलाज ॥ ॥ डयलालचंदा नृदगसर्वदवकिरुवनलिना

॥ ५ ॥ ॥ अ नृदगसर्वदवकिरुवनलिना ॥

संस्कृतसंग्रहः ॥

लमाभ्यः यवनदिदात्र ॥ यवनयचानः नकु कनवंधरवियनि
नवम्यः दालकसिद्धा ॥ ३३ ॥ ॥ श्यागनाग ॥ सहजसमा
रुद्वनवनाया ॥ यिषुवननाथय दिविनाता ॥ कु ॥ युजयीमरुल
सगुष्कारिखक ॥ कसमनकुनि सडीकागसंरुवा ॥ ॥ हानख
यीतीः विम्ब व्यापिनी ॥ किन्दनितनामहासुखदाता ॥ ॥ उझाटाव

जंज

संस्कृतसंग्रहः ॥

दनठिन्रियायवस्य श्यानविन्दुलसमहासुखनाया ॥ गुन
यमादः गुनरुनकुया ॥ रुददी ममाकनससात्रसमरुदा ॥
॥ ३३ ॥ ॥ श्यागगंधा रुद्रवि ॥ द्रगिन्नमकटः कियनी
मनिरुखत्रचमयग ॥ कु ॥ खदियवकुसल्यत्रमखत्रयल
मयदं ॥ ॥ गमटसुनिवद्रुयिथिसः कथकटदुधन ॥ ॥ वात्रिपु

काँठ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लिङ्गाश्चैव तत्सर्वं श्रीमन्नमोऽर्चयन् ॥
 यश्चाप्नोति ॥ ॥ विष्णुं नमस्कृत्य ॥
 अनन्तकर्मण्युत्तिष्ठत्यश्वत्थामिव ॥
 नमोऽर्चयन् ॥ ॐ नमः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पारश्वामनी

का. ग. ००२४॥

दि॥ का. ग. यि. प्र. थि. या. वा. ना. म. म. नि. ल. क. र्क. का. ग. रा. श. य. न. क. यि. थि. दा. यी.
व. ऊ. यि. क. नू. ल. कि. या. यि. न. ला.
ऊ. यि. १. ति. दि. मा. का. दि. ना. न. व.
न. ग. म. ध. म. य. ना. यि. व. ऊ. न. या. यी.
व. नू. व. ऊ. न. या. यि. ॥ ॥ च. ड. स. म. य. क. मु. लि. शि. ना. क. य. न. ला. य. य. न. या.

ऊं ले

से. व. वे. ४॥

यि. १. म. न. व. ऊ. ध. न. सा. नि. ऊ. नू. ग. दि. रु. न. खा. ऊ. न. या. यि. ॥ ॥ यु. ख. म. म.
ग. रू. क. न. क. शु. क्का. स. र्द्ध. न. न. म.
यि. ग. दि. ऊ. म. ना. य. न. या. यि.
लि. ॥ स. र्ध. व. र्द्ध. मं. धि. ग. वि. म्भ. मा. न.
धि. ग. का. न. ध. न. सि. यि. नि. ला. च. ना. ॥ ॥ न. मा. मि. वा. रू. लि. सि. धि. या. गि. नी. ग. न.

॥ र. ना. ग. न. वा. व.

कविगुक्तित्रयानि ॥ श्रीवज्रसत्त्वः आवाधियात्रः अनूर्कप्रसिद्धियत्रमा
 क्रूरप्रदं ॥ १ ॥ याम्ययुक्तक
 हेतव्ययुक्तनित्रयश्चयत्राकि
 सुगमः व्यातकत्रयं ॥ २ ॥ यश्चि
 त्रयिहवनः रुक्मशालिगिताश्चयत्राकदधुवनः वित्रविक्रमः तागादिइ

३९

सुगमः व्यातकत्रयं ॥ ३ ॥ उरुत्रविष्ठातकः मंत्रकसद्वननः वृककठासंय
 तः गद्वत्रयमभा मंत्रविश्ववक्ति
 मनव्यातकत्रयं ॥ ४ ॥ ददन्य
 वीसंयतवज्रदह २ अष्टाष्टयम
 तः व्यातकत्रयं ॥ ५ ॥ नैमत्यनिलदधुः नित्रसद्वननः वज्रसिंखलासंयतवज्र

मंदननः वज्रगन्धर्वीसंवृतः पि
 स्मृताः वातादिद्रुगणः घाटका
 लारः मंदननः पालुमावलि संय
 नायिरुवनः ॐ आदिद्रुगणघा

टकत्रयं॥ ८ ॥ उर्ध्व उष्णीषचक्रः स्वतः संहतनः सहायगिरिसत्रासंयुत
 वक्रदंष्ट्रं शक्रचक्रविविधः विवर्धसगर्भः वस्त्रादिद्रव्य
 धः घाटकत्रयं॥ ९ ॥ ऊर्ध्व
 स्फुलिनीसयुतः वक्रदंष्ट्रं शक्र
 हास्त्रादिद्रव्यगर्भः घाटकलक्ष्मी॥ १० ॥ विरुवनकस्थितकालिगर्भका

दुर्मदयग ॥ ४ ॥ यन्मिभनकाचनः महाविनः प्रकवर्षस्वेभयाग
 धर्मेभमकलासनखः नशितद
 ॥ ५ ॥ दुर्लभमासाचनः महा
 यंशुनंगमसनखः यितवर्षः
 ॥ दददावत्रकोन्यदवीसादवर्जिः कूचद्वर्षकृषियाणधारीरु

दः ज्ञायाधियमिगतकिप्रयमि
 काधः म्मावर्षतनुविकगत्र
 उदकाटगामतर्कयकि ॥ ३

३४

गसनमहाप्रदध्ववधालिः ददनधियमिगदाकिप्रयकि ॥ १ ॥ नेसत्य
 काहादवीः यिधुनवर्जि कनक
 हाहिमः स्वभयाणधनाः कव
 वायवाकाहादवीः नागवर्जिली
 गसनवायुनाकाधनः स्वसहधियमिः किप्रयकि ॥ २ ॥ म्मावर्ष

वर्षः गवधायप्रयिरनमासनम
 नाधियमिः मदयकि ॥ ४ ॥
 दिगवर्षः कलिपाटधायिरम

त्रकाहादवीः ॐ स्वावकिः ॥ मवर्हः नरकाधवदनि ॥ विश्वासन गिनयः
 नत्रिसुलधात्रिः रूगाधियनिस
 शितचनुलाखनः सफवुक्काधु
 मयुसयत्रश्वः चलिमात्रगधसं
 मानयनः चनुलाखनसफत्रमात्रयात्रयंकि ॥ यिथि विष्णुसूत्रगधहा

दाव ॥ १० ॥ ददिनमयमडईव
 पात्रयंकि ॥ ११ ॥ कामाददसितवा

३५

षनागादिसुयत्रः रुचयीमात्रगधनासुकत्र ॥ १२ ॥ दहादिहदाहहं
 कात्रसंरुवाः युनमासिगीचंनु
 त्रः दानयनित्रः सर्वविष्णानि
 ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ गहरेवरी
 मिषयादयः सितां गहरेववाश्वुक्कायनियिताः वाहू किनामः चधुगहियनः

महालाखनं ॥ १३ ॥ आसायत्रियूल
 वात्रनिसिद्धिरुलदं ॥ १४ ॥
 ॥ अकात्रमजानः यितीवन ॥ १५ ॥

अकात्रसंज्ञा ॥

युनितऊत्रदा॥ ६ ॥ डंगलयतिकूमात्रमदाकालक्षययात्रयागिनीग
 मा२मयसांसमत्स्ययंचविधंय
 १ ॥ यवर्गजातःनादिगत्रयन
 वृद्धायतिश्वनाःगककनागःगक
 २ ॥ यवर्गजातःविहात्रववृद्धःअश्वकयादःयत्रहंनवा२००॥

ऊनःगृह्णन्नुत्वादंनुयितंनु॥
 दःयिष्यत्रयादःयत्रहंनवा२
 सत्रवात्रयःयुनितऊत्रदा॥

उंउं

युनिकूंकुमःककनकनागःकालांकुलाःनादीतऊत्रजा॥ ३ ॥ चतुर्व
 र्गजातःयवर्गसमनेचतयादय
 माहुऊगःकनंकहंनवाःवलीऊ
 काएतोःकनकीयादयःकायुहं
 अद्रुगहागःयचलुऊलदा॥ ५ ॥

कयिचहंनवा२वावादित्रकाःय
 त्रदा॥ ४ ॥ कर्चर्गजातःएकवृ
 लवा२कूमालित्रकाःमहायमा
 ॥ ६ ॥ कर्चर्गजातःमाएगृहद्वितिकूयः

कटिपादयः ड नमरुतं नवाश्वे वृविस्वमाः जूनकनागाः लक्ष्मि वदनाद्रु
 नासनकुलदा ॥ ३ ॥ यवर्गः
 दयः संदात्ररुतं नवाश्वामदामकाः
 रुकजवदा ॥ ४ ॥ भावर्गजा
 यः रुखनरुतं नवाश्वमहालक्ष्मि वदनाः भंस्वयात्रनागाः किलिकिला

ॐ

वाः वरुनकुलदा ॥ ५ ॥ रुतवकालिः पादरुतनः द्वादशचलनः ज
 लिचुचलनं श्वदवदनः नवि
 वरुयदलर्षा ॥ ६ ॥ **आका**
रुवी ॥ गियनिसनाथाकियां
 हानादिगित्या ॥ ७ ॥ **खचिकमाजा** लघयजुधूनाश्वमनदिवात्रया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

त्रसिचकननं॥ २ ॥ ऊं स्वरुवनं स्वरः तनितुं स्रक्ति २ अरु काधवाय
 नृद्वदनकननं॥ ३ ॥ यन्यज मवाजाः अरु कननामय २ द
 म्भुजदिदुः अस्मिचन्ददास ॥ ४ ॥ डनमाधियगिः यवाय
 कुसद २ वद्वयाभवाक्याटन कननं॥ ५ ॥ ससिचमनाथः
 स्रुगगदुगथानश्रुगगकगिथंनुः अरुनादिदाय ॥ ६ ॥ ऊं दगनवाजा

ॐ

गद्यनकायत्रिनाथद्वतवज्जुहः वन्धनकननं॥ ७ ॥ त्रुगलसत्रन
 वविद्यकुरुसक्ति २ नाथस्रु
 अद्वाधनुवनाथं वक्रायिति यनुः नडिवनियूय ॥ ८ ॥
 ससिचकननं॥ ९ ॥ वृद्ध विल्याश्रममाधुविध्वंकिरु
 मादिगारिगमात्रः शासनकननं॥ १० ॥ वाद्यनीचलनीः रुद्रवागध

उरुलविनवि कुमवकुम साकाधालेदमादिगः ३ न्यतांरावकवृक्ष	ककाधियतिगधः संपासकन
रगदात्रसामनः अतिदात्रनः	उदिकयः हं कात्रकीलनद
नी ॥ ४ ॥ विदिगवृक्षानः व	सममनः मदारु मित्ररंताधिति
सादिग स्तुलनं २ अगदूदास	यतिगनलीखयं ॥ ५ ॥ मयचनादमादाः वज्रकाधामादाविनाः दादादूदास

नं०

अतिहिमतादं २ ददनाधियतिः सगतयविदामाः सर्वमात्रात्रिन संपासयंति ॥	माद्यनयात्रगकनास्तु मयाषर
३ ॥ काधमदीयनः वज्रविक	दयंमादास्तुलिनयिर्हं ॥
अस्रनालिद्रुलः मालात्रिह	दत्रयः रुवरुयवादनः सर्वसु
न गजयवंजकाध अगिलीः	स्वदं २ अतिनाधिलाकलेः मालात्रिहं द्रुलद्रुदीमायायविष्टुदनन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ८ ॥ उद्धृष्य च कुर्वतिः उद्धृष्टा विद्युदाकाशसूत्रकिर्तने रदवा
दिसममयलिवालालयर्थः सा
रमाकवकतादाविद्याः यामात्रवा
नयः दानयतिलः सर्वसयकत्र
॥ ॥ रमागमलिवीत ॥ मून्यनित्रं ऊहाः यत्र सपुत्रुः सूनमायमीयुदर

मालयद्रुसंचिह्नित ॥ ९ ॥ स
सितः मात्रद्वनं रजासायलिय
माकृष्टलदं ॥ १० ॥

ॐ

रावद्वियः संदावजः नानासिमायिकावू ॥ ११ ॥ नवूरुनवनिर्वाहगदिः
द्रुम्यमसुहवकं रऊरुप्लयिम
॥ १२ ॥ अखालमकविक्रियाः
दाशुहः नाहदिनाचिरु ॥ १३ ॥
यिमनरावद्वसूत्रनित्रं ऊहाः यत्र सपुत्रुः सूनमायमीयुदर ॥ १४ ॥

नरावगच्छः स्वयत्रसायिकर्क
नासाविद्रुनचिरुद्वसूत्रमम
द्रिमयदिविद्रुसंदावजः निनिराव
॥ १५ ॥

१५३ दि गी य कि ४॥

ऊलमकचलुसदिः नासाखरुनमिहृयिश् विमिसामधुलचकाजः गनय
संसावः खरुसर्षी ॥ १५ ॥
निः श्रुतिनित्रवर्धुश्चयचयुगा
वाधियनिः दनित्रवर्धुश्चरुड
२ ॥ यन्नगाधियनिः लाकालवर्धुश्चरुडनागरुयदलनः श्वनवदनी ॥ ३ ॥

॥ १५ ग र न वी ॥ पूर्वदिगीय

माहाः काकवदनी ॥ १ ॥ डरु

नूकाननरिमः ऊरु रुयदलदी ॥

१२

यमनिद्यानः लोत्रवर्धुश्चरुडकालाश्चरुडः यमरुयदलनः ॥ ४ ॥ यन्न
ऊययनिः नित्रयिगाश्चरुवदि
५ ॥ ऊलुधनश्चलः नाग्र
त्रवदनी ॥ ३ ॥ मानूगाधिय
सर्षी डरुकावदनी ॥ १ ॥ रुकाधियनिः निरुगकवर्धुश्चरुड

रुयवदनीः मरुकाधवदनी ॥

दुवर्धुश्चरुयिगात्रुवर्धुः कला

निः लादिगश्चरुमाश्चरुवागात्रिना

॥ १ ॥ रुकाधियनिः निरुगकवर्धुश्चरुड

॥४५५५५॥

नं: दनिगनिल्लाहा ॥ ८ ॥ द्वादशावित्रं: महाकायवदनं: जाकि न्यांद	युग्माद: गभवनि यिगी गभी क
वीआलिङ्गक्षरणी चकसम्वन	गममाभिादिरुज्ज्वकमस्वत्रक
लिङ्गा ॥ नं ३ ॥ ॥१२३३३॥	कु ॥ गता हूं हूं रतना गतं हूं हूं हूं
वर्णरमकूठकशादिगंवना ॥	॥ बुझकनाठक: द दिनकन गिरहाउ आरवनससारिता ॥ ॥ शु

नं ३

॥४५५५५॥

ऊं मधुलमायगा दनसत्र गिरवऊ मधुली गयुसारिता ॥ ॥ सगगु	ऊवादिगुंरु सिल्यधना ॥
पूववधसिल्लंगगधत्रियाश्व	राखत्रस्वभीमस्व: वऊ चिरु
नं ३ ॥ ॥१२३३३॥	ठागात्रमनादत्र: मंशुवजा:
य: धर्मादयायत्रिगु मित्रश्व	कु ॥ इटरावतुन: ददयकमत्राधियच
धागुदियकमलवत्र ॥	

कलेश्चास्ति सिद्धि वत्र विद्युत विना सतः क्षयी प्रमदा मदा सिद्धिः ॥
 ॥ जादिवृद्ध दियमास धल मधुलः विनासयि स्ववचक ॥
 शनिवतिलवर्णसूत्र किमधी मनुः मन्त्रा यनः यत्रिमत्र ॥
 ॥ यसात्रिप्रददादिद्वंद्वं प्रगाह्वत्रकगगडधनमंशस
 यवृद्ध किनः प्रक कप्रियाः निऊरुवादि ययात्रि रायत्र ॥ ॥ ग
 ॥

०४

त्र्युडे दम सिम यिपूङ्गः साकूत्र विरु विरु गत्र शसत गुवृचत्रमसि ॥
 प्रगमध्वनीयाः रुनयि सूत्रगवः ऊः तल्वत्र ॥ नंदं ॥ ॥ ॥
 गर्गक्षेत्रवि ॥ शिदत्रयमत्रगु कमलः मदागूयकत्र शदवीव
 ऊविनासितिः रगाह्वानचक्र ॥ ॥ यिवयिप्रमदात्रसल्लभक
 दहन शस्त्रगर्माक मागसुखडधनार्थ ॥ ॥ वक्रवात्रादि अहिमनु

शिदत्रयमत्रगु ॥

यनमरुतनचयनमादनसोचयविदं॥

नचयेमुनसमादर्या॥ ॥रुच

सदयकविमुडिं॥ ॥यनकुय

यनमरुय॥ ॥लाकासकगि

डिनप्रय॥ ॥गसागन्धनमवृनप्रयाशनवृप्रयनचनियनुमावि

॥जागधरवतमादनसोचयविदं॥

नलावकःमिषमकुरनिलानग

वधशिलाकाशनतनुगननुव

वतिनगलरगलविवडिगसि

विननुमावि

नंउ

युडि॥ ॥यत्रसनधर्मनसयत्रविमुडिशुधरावजलाऊतुमं

॥रु॥ ॥रवागरेत्रवी॥

सुखिनागवडिनमयाप्रगः

यनिगमयाःगदकनाग॥

वायूनादसदिगंविदिगवलियवीगिलरजुप्रसममनःदुषिगंवि

चनुगाममनःसिप्रसवकाःवा

दात्रममनःप्रुधकवृकाः

कुगण्डकमजकःरुगवर्क

दुषिगंवि

वेनुगगान॥

रुट्कं च कः कं नं रं नाना विदा नः ॥ यो यम सदा वलि यका ॥ ॥ स
 मयो न दं दुः का गो व न द वा र ॥ वा हुं न वा हुं लः च ड म द न
 यना ॥ ॥ मि न यः क नं क ॥ कृ णा वलि च्च र र पू षि क नं
 कः स ता कू न व य न ॥ ॥ यो यम सदा वलिः य रु व न ग य
 न र स य मा सः म रु नू धि न आ हा ल ॥ ८३ ॥ ॥ र वा ग न लि न ॥

॥ ८६ ॥

॥ ८६ ॥

विश्वय विश्वय वि नू य व न सं का ग्यः ऊ न यि चं दा नि नि ना रि क मः
 न र द द यि कि न वि नू म मिः ॥ अ द यि स र ग व रु णि नि आ र
 स वि स्था म स य नं ॥ ६ ॥ न मी ॥ मं ई या स्वं का न च कः द व रु स
 त्व न वि ल्प नू यं र य वि य दू म ॥ सं का लः सं क व नि स य नः स रु
 ऊ आ न न्द म य ह्ना न नू यं ॥ ॥ व रु य रु का स रु कू म नू न रु नः ना म स

गिगीज्जुकाख्यकानंरुङ्गगगद्वनासनंवाधिरुलदायकंःऊनधर्म
 मावृणवलिष्ठा॥ ॥युववा
 चियःसमिमकूठचंदनडगा
 त्रिनयनस्यस्वप्नसूर्यरुवनल
 प्रसायासृष्टःरावयत्रिरादनाःवृधर्म्मसंघसन्ननागमियाशुन

नंते

वनसिदधत्रियाःगाडानिसूत्रतवङ्कःऊल्लऊल्लमावृल्लवृद्धसन्नं
 ॥८४॥ ॥र्यागगवदमी
 कायिसृष्टयहनादःमलुलना
 ऊगगनिवासियात्र॥रुमक॥
 थागगात्रयःसुधधर्म्ममनेनासादसमलुलंमरुमं॥ ॥अमियज

८३।विनिमनव८॥

मियः निजजनदस्य २ सदृजसुन्दरिनेयाः किनद्रुप्रययिष्य ॥

द ॥ सर्वत्रथं सयुक्तसर्वीत्रमं वि
था खमधुलं मृगमं ॥ ॥

वज्रवायादि आलिगनदला

नचर्या विस्वधकं समंकरुडवाचागं राखमधुलं मृकमं ॥ ॥

वाकिगं समंकरुडकायागं

वचवकागिनीयत्रमत्रमत्रा ८०

॥ य ॥ सातधर्मागसंभुनंझ

॥

उथरुयादाः कचमकवात्रिशुय आलिगनः नित्रावर्धुवात्रि ॥ ३

॥ सर्वसुखमहाचिन्तं गुडय

लायः ॥ राखमधुलं सत्रथ

नाथयदः सर्वननादिनाः विला

पूकानादिषा ॥ ऊरुचर्कयलिवरुतः किनगुहासुनदयमादृष्टः ऊस्यातस

कलिनिर्मनः समंकरुडवि

॥ एमकासंयुक्तं सर्वजगत्

सर्वविल्यामादकननः दाकिनिद

॥ वरुण क म म ॥ १ ॥

कृपायुत्रहस्यमनसानृत्यंयमंसयन॥८५॥ ॥ रागमवाउ॥ वि
स्वकमवायत्रिःविधुविम्वारुं
कु ॥ नमामिऊंरुवताथव
त्रिगत्रकवलादिदहिम॥
द्विगुऊवकमस्वउत्यलमंऊलीहारिगा॥ ॥ सूर्यकवमविः

८९

॥ वरुण क म म ॥ १ ॥

विऊयत्रकंरुवसवंकनःवकुलिखरिगा॥ ॥ याचादिदीगिर्यमा
मिरुडागिरस्वस्ववभूतिगऊरुं
रागमवाउ॥ वृद्धऊगमस्वत्रःसिहा
नवदन॥ कु ॥ नमामिऊगमस्व
त्रग्रात्रिगमम॥ ॥ ददिनकवनमनःवामवनरुमात्रिशूचयववऊ

॥ ४५ ॥

बहुउवावा ॥	॥ वज्रजाकिनिधायडाकिनीश्वरात्रजाकिनिःचः
दात्रजाकिनि ॥	॥ सिधिनी
जाकिनिदियिनिःचडसिकवा	याधिनिःकम्बुकडवाकिनीश
वृज्जसूत्रनत्रश्रीकगाम्बल	कानि ॥ ॥ द्वात्रिदत्रवृक्तं ॥ ८२ ॥
रागत्रालिग ॥ अयविद्याठकः	वदिगत्रवृक्तं ॥ ८३ ॥
	कात्रसजागरगजमस्वगद्ययिजा

८२

लिधयदल्ल ॥	॥ नमासिनुकमस्वकाधवायाश्ववकनीयव
विगत्रकं ॥	॥ ४६ ॥
मल्लवास्यागश्वर्वागधवा ॥	॥ ४७ ॥
यादवाश्वदगदिगमात्रविध	॥ ४८ ॥
वत्रविद्यतविनासनशमर्वति	॥ ४९ ॥
	॥ ५० ॥

५०

८५ गत्र का ४॥

गमनाद॥ यागत्रकानगत्रज्जाधियात्रशसिद्धाकागिर्वधूदहनलंदद
व॥ ५॥ नमामिश्रीलाकख
यज्जगदध्यात्रिया॥ ॥ हवि
नैनोऊदगधर्वदिगचनन॥
श्याधियात्रिदइमदवध॥ ॥ सुखावगिधुवनधर्मसुखलश्लोक

६३

८५ गमिश्रीहृत्रक ४॥

खनजलजलमनध॥ ८६ ॥
हवकविनाः चतुस्यखनविः
यात्रलंककः साहिरगमीखनित्र
सयत्रवियायितः कत्रधनयः
नमामिश्रीगजचर्मविधुविताः यात्रचर्मखण्डमडाशर्मधालिगध

॥ यागत्रेववि॥ नमामिश्री
खकविनाऊठाशयचवकक
गन॥ ५॥ गनाऊं गनाऊं हं
सलुडधाननशीसुखया॥

कयाशयत्रः इदानीं इष्टुमिव चतकवर्धं ॥ ॥ अतिशयस्वनादिकः ॥
 इष्टुमिव चतकवर्धः ॥ ॥ अतिशयस्वनादिकः ॥
 वंशः दशादिगमात्रसंगानक ॥ ॥ अतिशयस्वनादिकः ॥
 नसहलक्षः विष्टुमिव चतकवर्धः ॥ ॥ अतिशयस्वनादिकः ॥
 वज्रसूत्रनागतः रुनायि यत्र सादिवज्रयुक् स्मृतं ॥ १ ॥ ॥

ॐ

ॐ

रत्नागल्लुङ्गी ॥ ॥ वासस्वत्यात्रयत्रः दहिनकत्रादि शयायनस्थ डत्रलडमा
 त्रयुषिणा ॥ ॥ ॥ दवीनाचयिण
 दवीः त्रिभुवनपायिण ॥ ॥
 श्वागहस्वमादकत्रातिनष्टदी
 जनदवी श्वागहस्वमादकत्रातिनष्टदी ॥ ॥
 ॥ गृहि सं दानलायाः क

पु. ४८॥

ऊ. ऊ. लने नुदुग्ग म म व ध स प्र म ग ति ॥ ले ३ ॥

॥ रा ग म पा उ ॥ वृ का प्रः

सं जा नः प्र त्रि मा स न र ह श क न क

व र्ध न व व क ख ट रु ज ॥ वृ

न मा मि ऊ न नि द वी यी व स र वा प्र

श र त्त म कू ट आ र प्र ध रु सि का

॥ ॥ वा म गु र ड द व न मः

ऊ त्रि या श्व सु या त्र मि ता य रूः

क धा त्रि मा ॥

॥ ना ना वा धि त्रि य द्वा त्रि द द व ना श दि व ध व क र ॥

८०

पु. ४८॥

प्र त्ना दि द हि म मा प्र ॥ ले ४ ॥

॥ रा ग म पा उ ॥ गु र्ध म धु ल म म

दि रु ऊ ल क म र व श न ग न म कू

ट क म वि नि त य ना ॥ वृ ॥ न

मा मि यी वृ द्ध ता कि ती वि रु वः

न र्व त्री रू म दि सि दि द वी मा

द य सा य ॥ ॥ द दि न कू

लि मः वा म क प्र ख य न र क

पू यि द वी म म न वा मि ती म

॥ व र्ध य त्रि नि वा सि त ड दि

॥ ४ ॥

गाथा लिङ्गिग गुङ्गा गुचकुरुकः ऊर्गाई वृथुश्च वद्धः सा नालं रुगा ॥
॥ चवृ विंशती त्रय त्रय च नु
यान लिङ्गा ररुणी मवी त्रय दवी
लिङ्ग नीलय म्मा दोग ॥ ७ ॥
त्रय रुरुग गुङ्गा कुरु त्रय त्रयिः चकसा वल्ह्य त्रय रुरुल ऊर्गा न त्रय रुरुलि

८७

यादिन मा मि साय त्रय त्रय कथिन रुरुग जालि रुरुय दं ॥ ८ ॥
आ ४ डं आ ४ रुरु आ ४ रुरु ३ ॥ मुरु
हा या का त्रय स सा रुरु क रुरु रुरु द
न रुरु व क रुरु रुरु न रुरु य रुरु म रुरु
त्रय रुरु रुरु रुरु सा दि य ना द व लं रुरु कालिग कुरु लिङ्ग म्मा दोग ॥ ९ ॥

॥८॥

उक्तः दत्तकः आलिंगनीनविर्यं ॥
यनादकत्रंगनसमल्लयुवत्र
सखत्रः अनित्रगत्रगधालितः
रुत्रवी ॥ दवदिगं वत्रः धवत्र
नावयिसमयुक्तः नयधत्रन्य ॥ १॥

॥समल्लसमसासदवाचिः
अवधूवययिसयिसदङ्गभी
गति ॥ १॥ ॥ २॥ ग
कित्राटिगङ्गचर्मविरुषिकः
कालित्राणीगलवाययियुध

॥८॥

मामिहं हं कात्रा ॥
लजल्लयुक्तसत्रधगति ॥
रयमिवः कत्रकलं लः सदङ्ग
मिः युधसत्रित्रा १॥ कासल
मामिहं हं कात्रा ॥

॥उथरुत्राठासखत्रकत्रुधमयः ददाङ्ग
॥यत्रयानत्रङ्गत्रासत्रधः
गुनल्यका नीत्रयज्ञानत्रमत्र
नः रुवद्रु १॥ खविनागनयुध
॥सङ्गकाधनमयसङ्गलल्यः यद्रुषि

वमकपियः यव रूतनप्रिय कायचक्रवर्तिरुदमर्कयविद्युः
 विनासत युधसासिर्दूक
 सा लोलीवितः धनधनं यन
 श्यीमतवज्रसखयनमध्वन
 ॥ १४ ॥ ॥ त्यागकासाद ॥ सर्वायात्रकात्राविकात्रः रुत्रियाडत्राविति

कार्त्तशसर्वनिनूयनियूजनयुक्तिवज्रिमज्जलचन्द्रमात्र ॥ शुद्धकुवज्र
 कवालिमशियविहादियवलि
 लात्राहाहाकूदहनयचसाल
 वियसमयनूयीधिश्चत्रल
 प्रकूरुनि ॥ ॥ ॐ नूयमज्जलयकात्रः शुभवद्विवायनाकात्र

१३६३३३

श्वरसूर्य इयिवाधलः नात्रपातन अष्टनामा ॥ ॥ ॐ नुवली तु
इति यात्र न धर्मसः सा
धात्रयानयति सर्वकार्यसिद्धि
लवालीचवृत्त्यरुक्तात्ररा
यत्र सखे नृनामा ॥ २२ ॥

दियात्रशक्तिकृत्यरु नृमः

॥ ॥ कर्त्तव्यात्रिअधिष्ठाना ॥ २२

आदानयति सरुलिवात्रात्ररा

॥ २२ ॥ विष्णुनामा ॥ २२ ॥

नः मंशुग्रावजयर्थं कचवुवकाशयिग नित्रत्रक सिनवर्द्ध यत्रावव
मकृगवना ॥ ॥ नमा मिश्व
ताशदवदवाधिदवैनयकिता
युयमयातिधमाचकुमडाहि
स्तिवातवायधनाचवुर्थवजयलुधात्री ॥ ॥ युनमयमयागुमश्व

गीश्वत्रायधर्ममागुमलुलहि

खखवाद्य सिद्धियुमादा ॥

नियकृयानयूरुकारहमियद

॥ युनमयमयागुमश्व

गायं न युग्मदा संवा धि पा फा र ह न यि धी मि व व ऊ च त्रि नाः ऊ ल ऊ ल
 पु रु स त्र ण ॥ १०० ॥ ॥ न
 त र्म र व यु य म र्वः षट् पु ऊ च
 न व र्ण य रि व कु नि ति त्रा च ना
 ऊ ग न इ रु ग ऊ च व वि ता म न पु त मा मि व ऊ स व र्व ती र य र्श म गा व

ॐ

द्वि दाय नाः नो मी नि वृ ह्म सं य दा न ना हूं हूं ॥ ॥ न मा मि र्श म क कम
 ल ध ना रु ल्या न क टि स र्व क ल
 वा स व ल च कु धा त्रि ना ॥ ॥
 नाः च द्या स न वि र्व द्या यि ना र
 क ना क र्व दाय नि ॥ ॥ न मा मि र्श य त्या लि धा धि ना व ऊ व रि द ह

ॐ नमः ॥

यनाश्विनिधिरत्नारुद्रममिहिनमामुश्वजस्रमध्या॥ १०१ ॥	
॥ ॥ रागावसंत ॥ कर्क	वर्षगन्द्वादमयुजवत्र
चउमस्वचननरेनवकात्री	॥ ॥ नाचयिप्रसंखनना
याश्वकवात्रादिजालिगान	सम्बन्ध ॥ ॥ अकिमिनामा
स्वधुलादाश्वयिनिर्पंकजः सिद्धियुदायनी ॥	॥ कायवाकचिरुयव

२४

ॐ नमः ॥

ऊजाकिनीशकात्रकाकमस्विचवद्वात्र ॥	॥ किंदकिमधुलच्छुषिसं
विनाशयुनमामिमहजह्नवस	हजातन्दी ॥ १०२ ॥ ॥ रागा
हेत्रवी ॥ मदिमधुलच्छिगजान	सूचिलं श्वदमात्राकाकस
हिकवीत्रं ॥ ॥ नमामिगीचधुम	हलायमवीत्रं श्वरुयदस्वना
सनमवीत्रं ॥ ॥ विविधरुद्रमरुषिगदिव्यसूतोतिशयितयनरिव	

सतदन्तसूचनमिलं॥

शदवास्त्रनन्दिनचरम ॥

शत्रुं दमयति नृनिष्ठायाम्

गकाभाद॥काकाननरुमाऊ

दधार्नं २०० नमः सुधार स्वर्वाङ्गैः यथा यथा दानं लिखितं

॥ अगमवादिगदलदायकं सुखिनी ॥

॥ अमरगुप्तचन्द्रवर्द्धनस्य ॥

सप्तमं ॥ १०३ ॥ ॥ १२ ॥

नीलवर्णस्य सवर्णस्य नृकल

॥ या च दानं लिखयत्या लिखेत् ॥

१ नमस्को नमः १
२ नमो नमः २
३ विष्णु नमः ३
४ नमो नमः ४
५ नमो नमः ५
६ नमो नमः ६
७ नमो नमः ७
८ नमो नमः ८
९ नमो नमः ९
१० नमो नमः १०
११ नमो नमः ११
१२ नमो नमः १२
१३ नमो नमः १३
१४ नमो नमः १४
१५ नमो नमः १५
१६ नमो नमः १६
१७ नमो नमः १७
१८ नमो नमः १८
१९ नमो नमः १९
२० नमो नमः २०

६३ दिगा

६४ नमोदि

६५ गमसा न

६६ सागमदि

६७ विरय

६८ विविनि सनवेन

६९ विरयक मन

७० वेरुङ्गी गमस्यन

७१ क्रय विव्रातक

७२ योगनक

७३ नमो मित्रादि नक

७४ नमो मित्रादि नक

७५ नमो विरयन

७६ नमो विरयन

७७ नमो विरयन

७८ नमो विरयन

७९ नमो विरयन

८० नमो विरयन

८१ नमो विरयन

८२ नमो विरयन

८३ नमो विरयन

८४ नमो विरयन

८५ नमो विरयन

८६ नमो विरयन

८७ नमो विरयन

८८ नमो विरयन

८९ नमो विरयन

९० नमो विरयन

९१ नमो विरयन

९२ नमो विरयन

९३ नमो विरयन

९४ नमो विरयन

९५ नमो विरयन

९६ नमो विरयन

९७ नमो विरयन

९८ नमो विरयन

९९ नमो विरयन

१०० नमो विरयन

१०१ नमो विरयन

१०२ नमो विरयन

१०३ नमो विरयन

१०४ नमो विरयन

१०५ नमो विरयन





